जय मधुर मीनाक्षि मां पालय

राग: ताळ : खंडनड

पल्लवि :

जय मधुर मीनाक्षि मां पालय
जय गिरिश लोलाक्षि मां पालय

चरण:

१. जय पांड्य नरपाल कुलदीपने
जय वीर्य वि ध्वस्त रिपु मंडले
जय शीतनग दृष्ट निजभर्तृके
जय सुंदरेशान सम्मोहने

२. हरि सोदरी त्वंहि हरि विक्रमे
शिव सुंदरी त्वंहि शिव सन्नुते
मधु मंजुला त्वंहि मधुराश्रये
विजिताशया त्वंहि विजयप्रदे

३. मीनाभ निजनेत्र मृदु विभ्रमे
तद्दृष्टि परिपुष्ट नत मंडले
मधुरा पुरोन्निद्र भद्रासने
मधुरासि सच्चिदानंदात्मिके